जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक

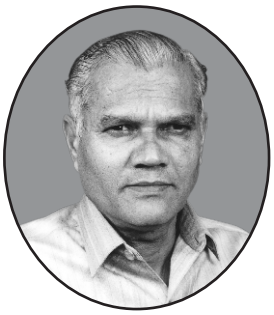

जैन जागृति

(Since 1969) www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.
☎ : ०२० - २४२१५५८३, मो. : ८२६२०५६४८०
मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१

❖ संस्थापक ❖
स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया
: सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ वर्ष ५२ वे ❖ अंक ३ व ४ ❖ नोव्हेंबर-डिसेंबर २०२० (संयुक्त अंक)

या अंकात	पान नं.		पान नं.
● दीपावली पूजन विधी	२३	● जागृत विचार	१०९
● दीपावली पूजनाचे मुहुर्त	२९	● खुशी के बहाने नहीं अवसर खोजिए	११०
● एक वह भी दिवाली थी... एक यह भी दिवाली है	३१	● रत्न संदेश	११२
● दीपोत्सव का महापर्व	४३	● सप्तमपाप स्थानक : मान	११३
● अंतिम महागाथा -		● सफलता चाहिए तो, जल्दबाजी न करें	११७
※ २३ : हिंसा का आमंत्रण	४७	● अथांग जीवन सागरातील अनमोल मोती	११८
※ २४ : आत्मज्ञान की ओर बढते कदम	५२	● ऐसी हुई जब गुरुकृपा	१२०
● आपका कचरा : उसका खजाना	५७	● जीवन और धर्म	१२१
● लक्ष्मी-पूजा और दान-पुण्य	६७	● रुठे को मनाना समझदारी	१२१
● सुखी जीवन की चाबियाँ : दया	६९	● कम खाओ, गम खाओ, नम जाओ	१२३
● कैसे हो घर का वास्तु ?	७६	● जीवन बोध : संकल्प शक्ति	१२६
● अ.भा. समग्र जैन संप्रदाय तुलनात्मक तालिका २०२०	७७	● पैसा आपका है लेकिन संसाधन समाज के है	१२७
● आत्म बल लौटाता है आत्मध्यान	९१	● शरदाचं चांदणे - नक्षत्राचे देणे	१२८
● स्वभाव - परिवर्तन	१०१	● पटाखों की हिंसा, बर्बादी ही बर्बादी	१२९
● विनम्रदानी - खेमा देदराणी	१०३	● जैन तथा अन्य धर्मियों की ईश्वर संकल्पना	१३१
● जिंदगी एक चलचित्र है	१०५	● गृहिणी ते सुपर हाऊस वाईफ	१३५
● अन्धकार से प्रकार की ओर	१०७	● दृढ निश्चय	१३७

- विकास के पथ पर जितो – घाटकोपर १३९
- श्री. राजेंद्र मुनोत, पुणे १४३
- जितो पुणे – महिला १४४
- जितो पुणे अध्यक्षपदी, श्री. ओमप्रकाशजी रांका १४५
- गौतम निधी अध्यक्ष – श्री. अनिलजी नहार १४७
- आदिनाथ सोसायटी – ग्रंथालय १४७
- अरिहंत जागृति मंच – निबंध स्पर्धा १४८
- नामको हॉस्पिटल, नाशिक १४९
- चि. कौशल टाटीया – अॅवार्ड १४९
- वंचित विकास संस्था, पुणे १५१
- श्री. विनोदजी गांधी, पुणे १५१
- जैन सोशल युथ ग्रुप, पुणे सेंट्रल १५२
- सुर्यदत्ता ग्रुप, पुणे १५३
- श्री सौभाग्यमुनिजी म.सा. ''कुमुद'' १५५
- प्राकृत आणि पाली भाषांचा इतिहास – पुस्तक प्रकाशन १५६
- समग्र जैन चातुर्मास सूची का विमोचन १५७
- दीपक की संस्कृती १५९
- अरे संसार संसार १६०
- कथाएँ तीन : बोध हजार १६१
- आनन्द वचनामृत १६३
- यह दर्पण है १६९
- हास्य जागृती १७१
- पाणी के ९ गुण १७२
- श्री. राजेंद्रजी बाठिया, पुणे १७५
- अपने को केवल माध्यम समझें १७६
- दुर्लभ मानव – भव व्यर्थ न जाए १७७
- नवकार गीत के रचनाकार १७९
- डायग्नोपिन कोठारी डायग्नोस्टीक सेंटर १८१
- पावापुरी तीर्थ १८३
- दीप पर्व १८४
- शतावधानी रतनचन्द पुस्तकालय १८५
- विविध धार्मिक, सामाजिक व राजकीय बातम्या

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर ❖ एका वर्षात तीन मोठ्या अंकासहित

पंचवार्षिक	रु. २२००	त्रिवार्षिक	रु. १३५०	वार्षिक	रु. ५००

या अंकाची किंमत १०० रुपये.

- www.jainjagruti.in
- www.facebook.com/jainjagrutimagazine

जैन जागृति वर्गणी व जाहिरात – रोख/मनिऑर्डर/ड्राफ्ट/AT PAR चेक/ पुणे चेकने / RTGS / SBI Online / Jain Jagruti Website इत्यादी द्वारा पाठवावी.

BANK ACCOUNT DETAILS - A/C Name : JAIN JAGRUTI

Bank : STATE BANK OF INDIA — Branch : Market Yard, Pune 37.

Current A/c No. : 10521020146 — IFS Code : SBIN0006117

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२–१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे – ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे–सातारा रोड, पुणे – ४११ ०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक – एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411 037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

टिप : जैन जागृति अंकात प्रकाशित लेख, बातम्या, जाहिरातीचे सर्वाधिकार सुरक्षीत आहेत.

जैन जागृति मासिकात जाहिरात व वर्गणीसाठी संपर्क करा

फोन (०२०) २४२१५५८३, ऑफिस - मो. ८२६२०५६४८० **मो. संजय:९८२२०८६९९७ सुनंदा:९४२३५६२९९१**

Email : jainjagruti1969@gmail.com ● Press Email : prakash.offset@rediffmail.com

◆ जैन जागृतिचे प्रतिनिधी ◆

- **भोसरी, चिंचवड, निगडी –** श्री. चांदमलजी लुंकड - फोन : २७११९९४९, मो. ९९२१९११९४०९, ९४२२८३२८४९
- **पुणे शहर ❖ जळगाव –** श्री. अनील कुचेरिया, मो. : ९७६३६४५०५५
- **गुरूवार पेठ, पुणे –** श्री. जैन पुस्तक भंडार, फोन : २४४७२९५८
- **धनकवडी, पुणे –** श्री. सुरेंद्र हिरालालजी बोरा, मो. ७५८८९४३०१५ / ९३७३६८२१३७
- **महावीर प्रतिष्ठान, पुणे –** निलम रमेशचंद्र शहा, मो. ९०९६८००५४७
- **सदाशिव पेठ परिसर, पुणे –** सौ. स्वाती राजेंद्रजी कटारिया, मो. : ९८८१२०४३९०
- **वडगाव शेरी, पुणे –** सौ. भारती सुभाष नहार, मो. : ९८९०२७८३४६
- **वडगाव मावळ, पुणे –** श्री. राजेंद्र बाफना, मो. ९८२२२६२९०१
- **दापोडी, पुणे –** श्री. प्रवीण झुंबरलालजी चोरडिया, मो. ९९२२७५७७०६
- **नांदेड सिटी, पुणे –** श्री. प्रकाशजी हरकचंदजी बोथरा, मो. ९०११९८३६६६ / ७२७२९७२९९९
- **दौंड, श्रीगोंदा –** श्री. रविंद्र चेनसुखलालजी गुगळे - ९८९०७२३४०२
- **अहमदनगर –** श्री. महेश एम. मुनोत- मो. ९४२०६३९२३०
- **जामखेड, आष्टी व कर्जत तालुका –** श्री. प्रफुल शांतीलालजी सोलंकी - मो. ९४०३६८५६७७, ८०८७७०००७०
- **बीड –** श्री. महावीर पन्नालालजी लोढा, मो. ९४२०५५६३२५
- **ता. सोनई, नेवासा, पाथर्डी –** श्री. मदनलालजी सी. भळगट - मो. ९४०४२३१६११, ९८८१४१४२१७
- **कुर्डुवाडी, बार्शी –** श्री. सुभाष मोहनलाल लुणिया, मो. ८७९३००००८१
- **मुंबई** खारघर- श्री. मदनलालजी गांधी-मो. ९८२०५३६७९३
- **नाशिक –** श्री. पुखराजजी बाबुलालजी जैन (कवाड) फोन:०२५३-२३११००८,मो.९४२३९३९९९०
- **श्रीरामपूर –**श्री. निलेश सुवालालजी हिरण, मो. : ९३२६९७२७४७
- **बारामती-** डॉ. महावीर छगनलालजी संचेती, फोन : ०२११२-२२३८०७ मो.:९३२५००४९५०
- **अमळनेर, जि. जळगाव –** श्री. मयुरकुमार केवलचंदजी जैन, मो. ९४२२६५७१७७
- **धुळे –** श्री. चेतन सतिष कोटेचा, सुभाषनगर, धुळे, मो. ९४०४१९२४३४, ९४२०६६१४२६
- **शहादा, जि. नंदुरबार –** श्री. मनोजकुमार विरचंदजी बाफना, मो. ९४२१५२९६२६
- **इचलकरंजी, जि. कोल्हापूर –** श्री. पोपटलालजी बिसनदासजी गुगळे, मो. ९८२२६५०९९८
- **मिरज, जि. सांगली –** श्री. राजेंद्र वसंतलाल शहा, मो. ९४२११०५७४८
- **कोल्हापूर –** सौ. लता कांतीलालजी ओसवाल, मो. ९४२३२८६०१४ फोन.०२३१-२६९५४३३
- **सातारा व सातारा जिल्हा –** श्री. जयकुमार कांतीलाल शहा, वाठार, मो. - ७५८८५६१३२०, ९८५०१८२६४४

दीपावली पूजन विधी

त्योहारों में सर्वश्रेष्ठ त्योहार दीपावली क्योंकि इसे भारतभर में बड़े उत्साह और उमंग के साथ मनाया जाता है । यह दीपकों का, प्रकाश का, चैतन्य का, शुभ संकल्पों का मंगलमय त्यौहार है ।

जैन समाज में इस त्योहार का विशेष महत्त्व इसलिए है कि इसी दिन अमावस्या को भगवान महावीर स्वामी का निर्वाण हुआ था । वे जन्म-मृत्यु के दुखों से मुक्त होकर मोक्ष गामी हुए । चतुर्दशी और अमावस्या दो दिन लगातार भ. महावीर स्वामी जनसमुदायों को अंतिमदेशना (उपदेश) देते रहे । वह उपदेश ही उत्तराध्ययन सूत्र है । जिसका पठन-पाठन श्रवण इन दिनों में किया जाता है । कई महानुभाव बडी श्रध्दा के साथ उपवास करते है । भ. महावीर का जाप करते हैं । पौषध के साथ उपवास करते हैं । कार्तिक सूद प्रतिपदा के दिन प्रथम गणधर गौतमस्वामीजी को केवलज्ञान प्राप्त हुआ । नए वर्ष के प्रात:काल में गौतमस्वामीजी का जाप किया जाता है । सभी भक्त जन सुबह गुरु भगवंतों के मुखारविंद से शुभ मांगलिक श्रवण करते है । मंत्र गर्भित स्तोत्र का श्रवण करते हैं। इसके बाद ही अपने कार्य का प्रारंभ करते हैं ।

दीपावली त्योहार हमारे लिए एक महत्त्वपूर्ण आध्यात्मिक त्योहार है ।

दीपावली पूजन विधी

सर्व प्रथम घर के सभी सदस्य मंगलभावना के साथ तीन बार नवकार महामंत्र का भक्तिसे भर कर उच्चारण करे ।

नवकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं, णमो सिध्दाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं,
एसो पंच णमोक्कारो, सव्वपावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।।

तीर्थंकरों को वंदन

समवशरण का स्मरण कर पूर्व और उत्तर दिशा के बीच ईशान्य दिशा में महाविदेह क्षेत्र है वहाँ बीस विहरमान तीर्थंकर वर्तमान में विराजमान है अत: अत्यंत भावपूर्ण हृदय से उन्हें तीन बार वंदन नमन करें ।

गुरु भगवंत को वंदन

जो गुरु आपने माने हैं उन्हें श्रध्दापूर्वक वंदना करना ।

- शुभ मुहूर्त पर गद्दी या गालीचा बिछाकर भ. महावीर स्वामीजी, श्री गौतम स्वामीजी, श्री लक्ष्मी देवी, श्री सरस्वती देवी के फोटो पूर्व या उत्तर दिशा में रखें ।
- गद्दीपर नई बहियाँ (नोट बुक), बिल बुक, चेक बुक, सुवर्ण-चांदी या धातु के देवी देवताओं के सिक्के, नया पेन पूजा की सामग्री रखें ।
- पूजा के लिए साहित्य - खाने के पान डंढल सहित, सुपारी, लौंग, इलायची, कुंकुम, वासक्षेप अक्षदा (चावल), श्रीफल (नारियल), फूल, घी का दीया, धूप, अगरबत्ती, जल, फल, ईख (Sugar cane), नैवद्य, लक्ष्मी झाडु, लाभ (लाह्या) बत्तासा, मोली, आरती के लिए कपूर।
- पूजा करनेवाले घर का मुखिया तीन नवकार मंत्र का जाप करके हाथ में मोली बाँधे । फोटो, सिक्के इनको तिलक लगाएँ अक्षदा चढावे ।
- गद्दी की दाहिनी तरफ घी का दीया और बायीं तरफ धूप अगरबत्ती लगाएँ । और साईड में ईख (Sugar cane) खडा रखें ।

॥ ॐ अर्हम् नमः ॥

श्री

श्री श्री

श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्री शुभ 卐 श्री लाभ

श्री आदिनाथाय नमः **श्री शांतीनाथाय नमः**

श्री पार्श्वनाथाय नमः **श्री महावीराय नमः**

श्री सद्गुरूभ्यो नमः

श्री गौतमस्वामी की लब्धि, श्री भरतजी की ऋध्दि,
श्री अभयकुमारकी बुध्दि, श्री कयवन्नाजीका सौभाग्य,
श्री धन्ना शालिभद्रजीकी संपत्ति, श्री बाहुबलीजीका बल,
तथा श्री श्रेयांसकुमार की दानवृत्ती प्राप्त होवे !
श्री जिनशासन की प्रभावना होवे !

॥ श्री सरस्वती देवी नमः ॥ श्री महालक्ष्मी देवी नमः ॥

नूतन वर्ष

वीर संवत २५४७, विक्रम संवत २०७७

कार्तिक सुद १, सोमवार दि. १६/११/२०२०

पूजन दिन शनिवार दि. १४/११/२०२०

ॐ

卐

- नवकार मंत्र बोलते-बोलते दवात, कलम, दीया, कलश, लक्ष्मी, ईख (Sugar cane) इ. को मोली बांधे । कुंकुम तिलक करें ।
- नई बही के पहले पन्नेपर बाजु की चौकट का मायना लिखें ।

लिखने के बाद कुंकुम से स्वस्तिक निकालें । नई बहियाँ पिछले वर्ष की अकाऊंट की एक बही, बिल बुक, चेक पुस्तक, लक्ष्मी इ. सभीपर डंढल सहित एक पर एक दो पान रखें । उसपर एक रुपया और उसपर सुपारी, लौंग, इलायची रखें । हाथ में पानी लेकर बही के चारों ओर घुमावे । वासक्षेप, कुंकुम मिश्रित चावल के दाने हाथ में लेकर निम्न श्लोक और मंत्र बोलें ।

मंगलं भगवान वीरो, मंगलं गौतम प्रभुः ।
मंगलं स्थूलीभद्राद्या, जैन धर्मोस्तु मंगलम् ।
मंत्र – ॐ आर्यावर्ते, आस्मिन् जंबूद्वीपे
दक्षिणार्धभरते भरतक्षेत्रे-भारतदेशे (पूना) नगरे
ममगृहे श्री शारदा देवी, श्री लक्ष्मीदेवी
आगच्छ आगच्छ, तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ।

अक्षदा बहीपर अर्पण करें । बाद में निम्नलिखित स्तुति का पठन करें ।

॥ स्तुती ॥

स्वश्रीयं श्रीमद् अरिहंता, सिद्धः पुरीपदम्,
आचार्यः पंचधाचारं, वाचकां वाचनांवराम्।
साधवः सिद्धी साहाय्यं वितन्वन्तु विवेकिनाम्,
मंगलानां च सर्वेषां, आद्यं भवति मंगलम् ।
अर्हमित्यक्षरं माया, बीजं च प्रणवाक्षरम्,
एवं नाना स्वरूपं च, ध्येयं ध्यायन्ति योगिनः।
हृत्पदं षोडशदलं, स्थापितं षोडशाक्षरम्
परमेष्ठिस्तुते बीजं, ध्यायेक्षरदूरदं मुदा ।
मंत्रणामादिमं मंत्रं, तंत्र विघ्नौघ निग्रहे,
ये स्मरन्ति सदैवेनं, ते भवन्ति जिन प्रभा ॥

तत्पश्चात् निम्नलिखित मंत्र जप करते-करते **जल, चंदन, पुष्प (फूल), धूप, दीप, अक्षदा (चावल), फल, नैवेद्य** इन आठ वस्तुओं से वही पूजन करें ।

ॐ ह्रीं श्री भगवत्यै, केवलज्ञान स्वरूपायै, लोकालोक प्रकाशिकायै, सरस्वत्यै, लक्ष्मयै (जलं) समर्पयामि स्वाहा ।

दूसरी बार यही श्लोक बोलते हुए जल की जगह चंदन बोले इस प्रकार आठों ही वस्तुओं के नाम लेकर आठ बार यह श्लोक बोलें ।

पूजा में सभी सदस्य खडे होकर निम्नलिखित प्रार्थना बोलें ।

।। श्री सरस्वती स्तोत्र ।।

सकल लोक सुसेवित पंकजा
वर यशोर्जित शारद कौमुदी,
निखिल कल्मष नाशन तत्परा
जयतु सा जगतां जननी सदा ।।
कमल गर्भ विराजित भूधना,
मणि किरीट सुशोभित मस्तका,
कनक कुंडल भूषित कर्णिका,
जयतु सा जगतां जननी सदा ।।
वसुहरिद् गज संस्नपितेश्वरी
विधृत सोमकला जगदीश्वरी,
जलज पत्र समान विलोचना
जयतु सा जगतां जननी सदा ।।
निज सुधैर्य जितामर भूधरा,
निहित पुष्कर वृंदल सत्कारा
समुदितार्क सदृतनु बल्लिका,
जयतु सा जगतां जननी सदा ।।
विविध वांछित कामदुधाद्भूता,
विशद पद्म हृदान्तर वासिनी
सुमति सागर वर्धन चंद्रिका,
जयतु सा जगतां जननी सदा ।।

।। श्री लक्ष्मी स्तोत्र ।।

नमोस्तुते महालक्ष्मी महासौख्य प्रदायिनी
सर्वदा देही मे द्रव्यं, दानाय मुक्ती हेतवे ।। १।।
धनं धान्य धरां हर्ष, कीर्तिम्, आयुः यशः श्रियम्
वाहनाम् दन्तिन् पुत्रान, महालक्ष्मी प्रयच्छ मे ।।२।।
यन्मया वांछितं देवी, तत्सर्वं सफलं कुरू
न बान्ध्यन्ता कुकर्माणि, संकटान्मे निवारय ।।३।।

।। प्रार्थना ।।

सुंदर आरोग्य निवास करे दृढ तन में ।
आशा, उत्साह, उमंग भरे शुचि मन में ।
न हो अनुचित योग प्रयोग धन साधन में ।
उत्कृष्ट उच्च आदर्श जगे जीवन में ।
तम मिटे, ज्ञानकी ज्योति जगत में छाये ।
प्रभु ! दिव्य दिवाली भव्य भाव भर लाये ।

इसके बाद एक थाली में दीया लेकर कपूर से आरती करे - निम्न आरती बोले ।

।। आरती ।।

सकल जिनंद नमी करी, जिनवाणी मन लाय ।
सरस्वति लक्ष्मी करू आरती, आतम सुगुरू पसाय ।।
ज्ञान जगत में सार हैं । ज्ञान परम हितकार ।
ज्ञान सूर्य से होता है, दुरित तिमिर अपहार ।।
श्री सरस्वती प्रभाव से, लहे जगत सम्मान ।
ज्ञान बिना पशु सारिखा, पावे अति अपमान ।।
श्रद्धा मूल क्रिया कही, ज्ञान मूल है तास ।
पावे शिव सुख आतमा, इससे अविचल वास ।।
अष्टमपद विशति पदे, सप्तम नवपद ज्ञान ।
तीर्थंकर पदवी लहे, आराधक भगवान ।।

आरती के बाद निम्नलिखित अष्टदोहे बोले ।

।। अष्टदोहे ।।

अंगुष्ठे अमृत वसे लब्धितणा भंडार ।
जय गुरू गौतम समरिये, वांछित फल दातार ।।१।।
प्रभू वचने त्रिपदी लही, सूत्र रचे तेणीवार ।
चऊदह पूरब माँ रचे, लोकालोक विचार ।।२।।
भगवति सूत्र कर नमी, बंभी लिपी जयकार ।
लोकलोकोत्तर सुख भणी, वाणी लिपी अढार ।।३।।
वीर प्रभू सुखिया थया, दिवाली दिन सार ।
अंतर महूरत तत्क्षणे, सुखिया सहू संसार ।।४।।

केवलज्ञान लहे सदा, श्री गौतम गणधार ।
सुरनर पर्षदा आगले घट अभिषेक उदार ।।५।।
सुरवर पर्षदा आगले, भाखे श्री श्रुतनाण ।
नाण थकी जग जाणिये, द्रव्यादिक चौठाण ।।६।।
ते श्रुतज्ञान ने पुजिये, दीप धूप मनोहार ।
वीर आगम अविचल रहो, वर्ष एकवीस हजार ।।७।।
गुरू गौतम अष्टक कही, आणि हर्ष उल्लास ।
भाव भरी जे समरशे, पुरे सरस्वती आस ।।८।।

।। लोगस्स (चउव्वीसत्थव) का पाठ ।।

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ।।१।।
उसभमजियं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ।।२।।
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीयल सिज्जंच वासुपुज्जं च।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ।।३।।
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं चं।
वंदामि रिट्ठनेमि, पासं तह वध्दमाणं च ।।४।।
एवं मए अभित्थुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा।
चउवीसंपि जिणवरा. तित्थयरा में पसीयंतु ।।५।।
कित्तियवंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।
आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ।।६।।
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।७।।

।। नमोत्थुणं का पाठ ।। (२ बार)

नमोत्थुणं अरिहंताणं, भगवंताणं, आइगराणं, तित्थयराणं, संय-संबुध्दाणं, परिसुत्तमाणं पुरिस-सीहाणं, पुरिस-वर-पुण्डरीयाणं, पुरिसवरगंध-हत्थीण, लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहियाणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोयगराणं, अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, जीवदयाणं, बोहिदयाणं, धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं, धम्मणायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंत-चक्कवट्टीणं दीवोत्ताणं, सरणगइपइट्ठाणं, अप्पडिहय वरनाण दंसणधराणं, विअट्टछउमाणं, जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोयगाणं, सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिव-मयल-मरुअ-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति-सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जियभयाणं।

(दूसरे में - ठाणं संपाविउकामाणं णमो जिणाणं जियभयाणं)

(तिसरे में) णमोत्थुणं मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसयस्स अणेगगुण संजुत्तस्स जाव संपविउ कामस्स ।

।। मंगलपाठ ।।

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं । चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहु लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो । चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते-सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे-सरणं पव्वज्जामि, साहू-सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तधम्मं सरणं पव्वज्जामि। अरिहंतो का शरणा, सिद्धों का शरणा, साधुओं का शरणा, केवलिप्ररुपित दयाधर्म का शरणा। चार शरणा, दुर्गति हरणा और शरणा नहीं कोय, जो भवी प्राणी आदरे तो अक्षय अमरपद होय ।

अंगुष्ठे अमृत वसे, लब्धि तणा भंडार ।
श्रीगुरु गौतम सुमरिये, मनवांछित फलदातार।
भावे भावना भाविये, भावे दीजे दान ।
भावे धर्म आराधिये, भावे केवलज्ञान ।
पावे पद निर्वाण ।।

यहाँ दीपावली विधि संपन्न होती है । ●

दीपावली का यह दिन भगवान महावीर का निर्वाण दिन है अत: भगवान के फोटो के सामने बैठकर तन-मन को एकाग्र कर, रात्री में निम्न जप की २०-२० मालाएँ जपें ।

ॐ ह्रीं श्री महावीर स्वामी सर्वज्ञाय नम:

बादमें

ॐ ह्रीं श्री महावीर स्वामी पारंगताय नम:

की मालाएँ गिनें अथवा यथाशक्ति जाप करें।

कार्तिक सूद प्रतिपदा की सूर्योदय से पूर्व स्नानादि के बाद नमस्कार महामंत्र का जप करें और

ॐ ह्रीं श्री गौतमस्वामी केवलज्ञानाय नम:

२० माला फेरें ।

फिर यह प्रार्थना बोले...

कुंदिंदुगोखीर तुसार वन्ना
सरोज हत्था कमले निसन्ना
वाएसिरी पुत्थय वग्ग हत्था
सुहायसा अम्ह सया पसत्था

इस प्रार्थना के बाद विद्या संपदा का महान ओजस्वी मंत्र का अवश्य जप करें (२० माला)

ॐ ह्रीं ॐ

जैन मंदिर या स्थानक में जाकर संतों का प्रभु का दर्शन करें । मांगलिक श्रवण करें । गौतम स्वामी को मध्यरात्री के बाद भली सुबह केवलज्ञान प्राप्त हुआ अत: उस समय 'गौतम रास' अवश्य गावें ।

दीपावली की इस विधि का यथायोग्य पालन करें। सबका भला हो मंगल हो - कल्याण हो । ●

सन २०२० चे दीपावली पूजनाचे मुहूर्त

❖ **पुष्प नक्षत्र : निज आश्विन (मारवाडी मिती कार्तिक) वद्द ७**

शनिवार दि. ७-११-२०२० : सकाळी ८.०० ते ९.३० शुभ, दुपारी १२.३० ते २.०० चल, २.०० ते ३.३० लाभ, ३.३० ते ५.०० अमृत, सायंकाळी ६.३० ते ८.०० लाभ, रात्री ९.३० ते ११.०० शुभ, ११.०० ते १२.३० अमृत

❖ **धनत्रयोदशी : (धनतेरस) निज आश्विन (मारवाडी मिती कार्तिक) वद्द १३**

शुक्रवार दि. १३-११-२०२० : सकाळी ६.३० ते ८.०० चल, ८.०० ते ९.३० लाभ, ९.३० ते ११.०० अमृत, दुपारी १२.३० ते २.०० शुभ, सायंकाळी ५.०० ते ६.०० चल

❖ **महालक्ष्मी पूजन (दीपावली वही पूजन) : निज आश्विन (मारवाडी मिती कार्तिक) वद्द ३०**

शनिवार दि. १४-११-२०२० : दुपारी २.३० ते ३.३० लाभ, ३.३० ते ५.०० अमृत, सायंकाळी ६.३० ते ८.०० लाभ, रात्री ९.३० ते ११.०० शुभ, ११.०० ते १२.३० अमृत, १२.३० ते २.०० चल, पहाटे ५.०० ते ६.३० लाभ

वृषभ लग्न कुंभ नवमांश सायंकाळी ६.१० ते ६.२४, वृषभ लग्न वृषभ नवमांश सायंकाळी ६.४९ ते ७.०२ वृषभ लग्न सिंह नवमांश सायंकाळी ७.२७ ते ७.४०

❖ **नूतन वर्ष : वीर संवत २५४७, विक्रम संवत २०७७, कार्तिक शु।। १**

सोमवार दि. १६-११-२०२० : सकाळी ६.३० ते ७.१५ (७.१५ नंतर बीजचा क्षय आहे)

श्री शुभम् भवतु !

प्रेषक : नवीनकुमार बी. शहा - २३० पाटील प्लाझा, मित्र मंडळ चौक, पुणे ९. मो. ९८२२०९०३३९
पं. भवरलाल, पुरूषोत्तम दायमा १३०६ रविवार पेठ, पुणे-२. फोन २४४७४८३५, मो. ९२७३७५१३४६

एक वह भी दिवाली थी... एक यह भी दिवाली है

लेखक : श्री. तरुण बोहरा 'तीर्थ', जोधपुर

अगले सप्ताह दिवाली है और हर वर्ष की तरह इस बार भी सेठ करोड़ीमलजी अपनी आलीशान हवेली के रंग-रोगन, सजावट और देशी-विदेशी पटाखों पर एक करोड़ रुपया खर्च करने वाले हैं । करे भी क्यों नहीं ? बाप-दादाओं से करोड़ों की पूँजी विरासत में जो मिली है और खुद ने भी तो खूब कमाया ही है । खैर खर्च एक करोड़ का भले ही होता है, लेकिन लोगों से प्रशंसा और खूब वाहवाही सुनकर पूरा वसूल हो जाता है । इतने सारे लोग सैल्यूट भी तो करते हैं । खूब धाक जमती है और अगले दिन अखबारों में रोशनी से जगमगाती हवेली की रंगीन फोटो, विदेशी पटाखों की चमक-दमक और साथ-साथ सेठजी की दरियादिली के बारे में कम से कम आधा पृष्ठ का लेख । व्यापार सम्भालने के बाद सेठजी की कम से कम बीस दिवाली तो गुज़र गई, पर हर साल ऐसा ही होता है, दिवाली पर करोड़ रुपए आडम्बर में स्वाहा करके अपना नाम सार्थक कर देते हैं ।

रात के ११ बज चुके हैं, लेकिन सेठ करोड़ीमल की आँखों से निंद गायब है, बार-बार आज सुबह की घटनाओं के दृश्य नजर आ रहे हैं । आज पूरा शहर बन्द है, कोई रैली जो निकलने वाली है । स्कूल, व्यापार, बैंक इत्यादि सब अवकाश । सुबह उठते ही धर्मपत्नी के कहने पर सपरिवार प्रवचन सुनने जाना पड़ा, सब कुछ अवकाश था, इसलिए कोई भी बहाना काम नहीं आया ।

प्रवचन में गुरुदेव फरमा रहे थें दीयों की दिवाली तो हर कोई मना सकता है, पर दिल की दिवाली तो कोई विरला ही मनाता है । उदासी के अन्धेरों को दूर करने के लिए करुणा के दीप जलाओ । खुद की खुशी के लिए खर्च किया गया धन सिर्फ खुद को ही खुशी दे सकता है, पर दूसरों की खुशी के लिए खर्च किया गया धन अनेकों को खुशियों की सौगात देता है ।

आगे फरमाया - नशा भी कई तरह का होता है । किसी को धन का नशा होता है तो किसी को मादक द्रव्यों का होता है । किसी को रुप का नशा तो किसी को नाम का नशा होता है । पुण्यवान मानव ही नशे को छोड़ पाता है और वही मानव सच्चे अर्थों में महामानव बन पाने की क्षमता रखता है । सुनकर सेठ करोडीमलजी को जोरदार करण्ट-सा लगा ।

प्रवचन से लौटते समय रैली की वजह से मुख्य सड़क जाम थी, तो न चाहते हुए भी कच्ची बस्ती से आना पड़ा । कचरों के ढेर और दुर्गन्धमय माहौल । अलग ही तरह के दृश्य दिख रहे हैं... बस्ती की गलियों में... फटेहाल कपड़ों में बच्चे बोरियों में कचरा बीन रहे हैं । बस्ती के इकलौते हैण्डपम्प के पास खाली मटके लिए सैकड़ों औरतें पानी के लिए झगड़ रही हैं । वृध्द पुरुष पेड़ के नीचे गोल चबूतरे पर समूह में ताश खेलते हुए गप्पे मार रहे हैं और कुछ किशोर सिगरेट के धुएँ को उड़ाते हुए गाली-गलोच कर रहे हैं । कई नौजवान दादागिरी दिखा रहे हैं और उनके हाथ में शराब की बोतलें और गाँजे-अफीम की पुडिया भी सेठजी की नज़रों से छुपी नहीं है ।

सेठजी यथा स्वभाव... यह सब देखकर सेठानी को कहने लगे... कैसे जानवर जैसे रहते हैं ये लोग इस बस्ती में... ।

तभी बरसों पुराना वफादार ड्राइवर राजू गाडी चलाते हुए ही बोला - ''नहीं साहब, ये लोग जानवर नहीं इंसान ही हैं, लेकिन नशे की गिरफ्त और गरीबी ने इनको जानवर से भी बदतर जीवन जीने को मज़बूर कर दिया है । बस्ती में स्कूल और अस्पताल तो दूर की

बात... पीने के पानी की टंकी भी नहीं है साहब । हजारों लोग इसी नरक में रहते हैं और यहीं मर जाते हैं साहब । मेरा बचपन भी इसी बस्ती की इन्ही गलियों और गालियों में बीता है साहब ! बाप रोज शराब पीकर मारपीट करता था । एक दिन माँने बस्ती छोड़ दी और किसी भले सेठ के घर काम करके मुझे दसवीं तक पढ़ाया । रुंधे गले से राजू बोलता चला गया... यह माँ का ही उपकार है साहब कि नशे और गलत संस्कारों से मुझे दूर रखा, जाते-जाते भी ईमानदारी का पाठ पढ़ा गयी ।'' सेठजी की आँखों में दो आँसू आ चुके थे... क्योंकि शब्दों की चोट दुबार जो लगी है... पहले प्रवचन में गुरुदेव के द्वारा अभी कच्ची बस्ती में गाडी में चलते हुए । सेठानी मन ही मन गुरुदेव को याद करते-करते धन्यवाद अर्पित कर रही थी... और स्वयं सेठजी भी यही कर रहे थे... शायद जिन्दगी में पहली बार ।

आधी रात तक तो यही सारे दृश्य आँखों के आगे तैर रहे थें, और फिर कब नींद आई पता ही नहीं चला । सुबह के नौ बजे सेठानी को साथ लिया और राजू को बोला - गाड़ी कच्ची बस्ती की तरफ ले चलो । राजू तो खूब आश्चर्यचकित और स्वयं सेठानी भी... पर सेठजी तो इन सबसे अनभिज्ञ... मोबाईल पर अपने सीनियर मैनेजर को कुछ निर्देश दे रहे हैं ।

दिया तले अन्धेरा... ज्यादा दूर नहीं थी बस्ती... सिर्फ ५ मिनिट का रास्ता और पहुँच गए । बस्ती के बीच चबूतरे के पास लम्बी चमचमाती सफेद गाड़ी जैसी ही रुकी, श्वेतवस्त्रधारी सेठजी बाहर निकले कि सब लोगों ने घर लिया... अच्छी खासी हजारों की भीड़ जमा होगई बस्तीवासियों की । हर कोई भुक्तभोगी था और यही सोच रहा था कि शायद दिवाली की सस्ती वाली मिठाई लाये होंगे... आगामी चुनावों मे वोटों के बदले । तब तक तो सेठजी चबूतरे पर चढ़कर बोले भाईयों... इस बार की दिवाली आपकी जिन्दगी में सबसे अच्छी दिवाली होगी... क्योंकि...

क्या... क्योंकि... अरे सेठ रहने दे... तेरे जैसे कई सफेदपोश नेता और बड़े आदमी आये और झूठे वादे कर के चले गए... एक शराबी चिल्लाकर बोला।

सेठानी तो कुछ विचलित हो चुकी थी... लेकिन सेठजी उसी स्नेह से बोले... उन्होंने झूठे वादे भले ही किये हों, लेकिन आप लोगों को खुद को नशे का गुलाम बनाने की क्या जरुरत थी ? बच्चों को सरकारी स्कूल में तो पढ़ने के लिए भेज ही सकते थे । युवकों को काम पर भेज ही सकते थे ? तभी एक समझदार सा युवक बोला... सेठ पहली बार किसी ने इतने प्यार से समझाया है... खैर बातों से पेट थोड़ी न भरेगा... ।

हाँ भाई... मैंने कब कहा कि बातों से पेट भरेगा... पूरी बस्ती में बाँटने के लिए एक महीने का अनाज साथ लेकर आया हूँ । सभी ने देखा अनाज की बोरियों से भरे दस-बारह बड़े बड़े ट्रक बस्ती में आकर रुके हैं और साथ एक कार भी आई है... उसमें से निकल कर, पढ़े लिखे सभ्य से दिखने वाले चार आदमी सेठजी को नमस्कार कर उनके पास ही खड़े हो गए । शायद उनके मैनेजर होंगे ।

भाईयों, दस ट्रक में अनाज है और दो ट्रक भर के मिठाइयाँ और कपड़े आप सभी के लिए । और इस दिवाली...

तभी एक किशोर बोला... सेठजी पटाखों और दीयों के बिना तो हमारी दिवाली अन्धेरी ही होगी न... भाई मेरे... इस अन्धेरे को मिटाने के लिए ही आया हूँ। यह बस्ती पटाखों और दीयों से नहीं... शिक्षा से रोशन होगी, नशामुक्त जीवन और आरोग्य से आबाद होगी और इसके लिए मैं यह ऐलान करता हूँ कि इस बस्ती में एक करोड़ रुपये में से पच्चीस लाख की लागत से एक स्कूल बनाऊँगा जिसमें बस्ती के सभी बच्चे पढ़ेंगे, पच्चीस लाख में एक अस्पातल बनाऊँगा, एवं उचित मूल्यों की एक राशन दुकान बनाऊँगा, सभी युवकों को रोजगार मिलेगा । पच्चीस लाख में एक नशा - मुक्ति केन्द्र बनेगा । पच्चीस लाख में पीने के शुध्द पानी की टंकी और बस्ती की बहनों के लिए गृहउद्योग और

स्वरोजगार केन्द्र बनेगा । यह मेरे चारों मैनेजर... यह कार्य आने वाली होली से पहले-पहले पूर्ण करेंगे और हर वर्ष दिवाली पर मैं एक करोड़ रुपया इस बस्ती की इन सुविधाओं पर खर्च करुँगा । बस मुझे बदले में...

... बदले में वोट चाहिए... मंत्री पद की कुर्सी चाहिए... भीड़ में फुसफुसाहट हो रही थी... हाँ भाई हाँ... है तो आखिर व्यापारी ही.... मुनाफा तो देखेगा ही... कुछ गुस्सैल नौजवान बोल रहे थे और ड्राइवर राजू उन्हें चुप रहने को कह रहा था ।

हाँ भाईयों आपने बिल्कुल सही कहा... मुझे भी बदले में कुछ चाहिए... मुझे नशामुक्त बस्ती चाहिए, स्वस्थ बच्चे जो पढ़ लिखकर अच्छे इंसान बन सकें...। भीड़ में सन्नाटा छा चुका था... ।

सेठजी आगे बोले और हाँ आप सभी लोगों से भी चाहिए... आशीर्वाद, और एक वादा कि आगे से इस पूरी बस्ती में कोई भी किसी तरह का नशा नहीं करेगा । सभी ने देखा कि एक युवक ने तब तक ताश के पत्तों में आग लगा दी और हरेक आगे बढ़ कर सिगरेट के पैकेट, अफीम-गाँजे की पुड़िया और शराब की बोतलें आग में डाल रहा था । आग की लपटों से बस्ती रोशन हो रही थी... मौसम दिवाली का था... पर होली जल रही थी... नशे की... बुराइयों की । खुशियों के इस नूतन गुलशन में, बच्चे खुश हो रहे थे स्कूल जाने की खुशी में और कचरे की बोरी छोड़कर किताबों का बस्ता लेने की कल्पना में... बस्ती की औरतें रो रही थी... खुशी के आँसुओं के साथ । आँखें तो सेठजी की भी रो रही थी, क्योंकि नशा पिघल कर बाहर जो आ रहा था.... धन का... धन के अहंकार का ।

मैनेजर मिठाई, कपड़े और अनाज बाँट रहे थे और लेते हुए भीड़ जोर से नारे लगा रही थी... सेठ करोड़ीमलजी की जय... सेठ करोड़ीमलजी की जय...।

पर यह सुनने से पहले ही सेठजी तो खुशी के आवेग में गाडी में बैठकर रवाना हो चुके हैं... गुरुदेव के पास जाने के लिए... उनके चरणों में यह धन्यवाद अर्पित करने के लिए कि मुझे अहंकार के नशा रुपी दानव से मुक्त करा एक मानव बनाने के लिए... आडम्बर के अन्धेरे को दूर कर... करुणा के अमृत का रसपान कराने के लिए । सेठानी हर्षित मन से सोच रही है कि महापुरुषों का कितना महान् जीवन कि शब्दों से जीवन बदल देते हैं... वैसे ही जैसे एक कुशल कारीगर राह पड़े पत्थर को तलाश कर मन्दिर का देवता बना देता है ।

गाड़ी चलाते हुए राजू भी मुस्कुराते हुए सोच रहा है कि अब से महीने-महीने मन्दिर जाने की जरुरत ही नहीं पड़ेगी... आज से दर्शन तो हमेशा होंगे करुणावतार भगवान स्वरुपी गुरुदेव के और गाड़ी में बैठे... इस महामानव के... इस इन्सानियत के देवता के । गाड़ी में गाना बज रहा है... ।

एक वह भी दिवाली थी... एक यह भी दिवाली है ।

खिलता हुआ गुलशन, हँसता हुआ माली है ।। ●

महाराष्ट्रातील जास्तीत जास्त जैन समाजापर्यंत पोहचण्याचा
सर्वांत खात्रीशीर, सर्वांत सोपा व सर्वांत स्वस्त मार्ग...

जैन जागृति - जाहिराती साठी संपर्क करा.

भगवान महावीर की निर्वाण भूमी

पावापूरी तीर्थ

लेखक : महोपाध्याय श्री ललीतप्रभ सागर

पावापुरी जैन-धर्म के कल्याणक स्थलों में सर्वाधिक प्रिय है । यह वह महान् पावन भूमि है, जहाँ जैन धर्म के चरम तीर्थंकर भगवान श्री महावीर स्वामी का महानिर्वाण हुआ था । पावापुरी की माटी को ही यह महान सौभाग्य प्राप्त हुआ है, जहाँ भगवान ने अपनी प्रथम देशना दी । महामुनि इन्द्रभूति गौतम जैसे महापुरुषों को तत्त्वबोध प्रदान किया । यह भी एक महान संयोग की ही बात है कि भगवान ने अपने देहोत्सर्ग के लिए भी पावापुरी की पावन भूमि का ही चयन किया । भगवान ने अपने निर्वाण से पूर्व सोलह प्रहर तक अनवरत देशना दी । सचमुच, बिहार भारत का वह सौभाग्यशाली राज्य है, जहाँ भगवान महावीर और बुध्द जैसे अमृत-पुरुषों का अवतरण, कैवल्य और महापरिनिर्वाण हुआ।

पावापुरी और राजगृह दोनों करीब ही हैं । ये दोनों ही स्थल भारतवर्ष के पावनधाम हैं । यहाँ की यात्रा भगवान महावीर और बुध्द के चरण स्पर्शित कल्याणक-भूमि की यात्रा है ।

जैन धर्म की यह मान्यता रही है कि दीपावली पर्व का शुमारम्भ भगवान महावीर के निर्वाण के बाद यहाँ से हुआ था । दीपावली के प्रवर्तन के रुप में पहले दीप को प्रज्वलित करने का सौभाग्य इसी पावापुरी की पावन माटी को प्राप्त हुआ ।

भगवान महावीर के महानिर्वाण के बाद जिस स्थल पर उत्सर्ग देह का अंत्येष्टि-संस्कार हुआ, वहाँ की माटी को शीष पर धारण कर लोग अपने घरों में लेकर गये तथा अपने पूजा-स्थलों में अधिष्ठित किया। बूँद-बूँद कर कलश भरता है, वहीं बूँद-बूँद कर कलश रिसता है । भले ही लोग दो-दो चार-चार च्यूटी ही माटी लेकर गये होंगे, पर अगर हजारों-हजार लोग यह भूमिका अदा करें तो उस स्थान का गड्ढा हो जाना आश्चर्यजनक नहीं है । भगवान महावीर के अग्रज भाई नरेश नंदीवर्धन ने उस स्थान पर एक जलाशय और मध्य में मंदिर का निर्माण करवाया, जो कि जल-मंदिर के रुप में विख्यात हुआ । मंदिर भले ही बहुत बड़ा न हो लेकिन कमल के फूलों से घिरे जलाशय के बीच निर्मित यह मंदिर बेहद सुरम्य और नयनाभिरम लगता है । प्रतिवर्ष हजारों-लाखों लोग इस जल-मंदिर में आकर भगवान श्री महावीर को अपनी श्रध्दाभरी पुष्पांजली अर्पित करते हैं ।

जल मंदिर में गर्भगृह के अन्दर भगवान श्री महावीर की प्राचीन चरण-पादुकाएँ प्रतिष्ठित हैं । इन चरणों के पास दस मिनट के लिए बैठना भी भव-भव के पाप नष्ट करने के लिए पर्याप्त है । यह स्थल भगवान महावीर की आभामंडल से इतना ऊर्जस्वित है कि यहाँ आना भी एक साधक के लिए किस जाग्रत चैतन्य-पुरुष का सान्निध्य पाने के समान है ।

जल-मंदिर के पास भगवान महावीर का एक और बड़ा मंदिर है, जहाँ दिगम्बर आम्नाय के अनुसार परमात्मा की पूजा होती है । कुछ और आगे बढ़े, तो एक भव्य समवशरण मंदिर का दर्शन होता है । मान्यता रही है कि यह वह पवित्र स्थल है जहाँ भगवान ने अपनी अन्तिम देशना दी थी । पावापुरी गाँव के मध्य एक और विशाल मंदिर है । यह वह स्थल माना जाता है जहाँ भगवान ने अपने महानिर्वाण के लिए देहोत्सर्ग किया । इतिहास में प्रसिध्द राजा हस्तपाल की रज्जुकशाला यही वह स्थान है । राजा हस्तिपाल मगध नरेश अजातशत्रु के मांडलिक राजा रहे थे । इस मंदिर के पास ही यात्रियों के आराम करने के लिए विशाल धर्मशाला निर्मित है । सचमुच, पावापुरी की पावन भूमि जन-जन को शान्ति, साधना, त्याग और मुक्ति का संदेश देती है । ●